गांधी जी को भी बापू जी वो भारत का फादर कहते है। वर्ल्ड का फादर नहीं कहेंगे। यह दो फादर है। शिव बाबा भी फादर है। तो प्रजापिता ब्रह्मा भी फादर है ना। इनको वर्ल्ड का फादर कहेंगे। नहीं तो फादर एक होता है। यह निराकार भी बापू जी तो साकार भी बापू जी। एक ही बार इनका पार्ट ड्रामा मे बजता है। इसलिये ही कहा जाता है बाप-दादा। दादा द्वारा ही बाप से वर्सा मिलता है। यह तो बच्चे जानते है कि बेहद का बाप हमको पढाते है। कहते है जब भगवानोवाच तो उनको कृष्ण ही बुद्धी मे आता है। वो बेहद का बाप तो हो नही सकता है। बेहद का बाप तो निराकार शिव बाबा ही है। ब्रह्मा को कहा जाता है ग्रेट-2 ग्रेंड फादर। शिव बाबा को सिर्फ फादर ही कहेंगे। अब ऐसे फादर बच्चो को पढाते है। विदेही बाप हमको पढाते है थोडे समय के लिये लोन लेते है। निराकार ही सबको पढाने वाला है। वो बाप पढाते है तभी यह भी पढा सकते है। यह तो भाई के रूप मे भी आ जाते है, मम्मा भी हो जाते है। क्योंकि इन द्वारा वे ऐडाप्ट करते है तो मातपिता भी हो जाते है। वो तो निराकार है माता कहाँ से आयेगा? यह माता भी है तो पिता भी है। गायन भी है ना तुम मातपिता... शिव बाबा तो परमपिता है। उनको मातपिता कैसे कह सकते है? कहते है कि यह मेरी बनी है इनसे ऐडाप्ट करता हूँ। तो इनको ही मातपिता कह सकते है। शिव बाबा   ≠   तो सदैव है ही है। ऐडाप्टेशन देहधारी की होती है। बाप आकर ऐडाप्ट करते है और इनमे प्रवेश कर कहते है कि तुम हमारे बच्चे हो। बच्चे फिर कहते है कि बाबा हम आपके है। बाबा ने ~~समझाया~~ समझाया है कि शिव बाबा सभी का बाप है। तो जरूर आकर भारत को ही वर्सा दिया होगा। बेहद का बाप आकर मुक्ति और जीवन मुक्ति का वर्सा देते है। मुक्ति मे तो सभी को जाना ही है। तुम हिसाब किताब चुक्तू हो करते है योगबल से। तुम फिर भी पहले-2 ही आते हो क्योंकि राजाई करनी है तो ही ना। तुमको डबल इंजन खिचते है ना। तुमको पता थोडेही पडता है कि निराकार बात करते है वा साकार। कब वो बात करते है कब वो बात करते है। यह भी पुरुषार्थ है ना। सूक्ष्म वतन मे भी इस बाबा को देखते है। यह पास होते है। मम्मा बाबा की गारन्टी है। गाया भी जाता है अम्बा, सरस्वती। नाम इनके बहुत रखे हुये है। सरस्वती, अम्बा, काली। किसको भी पता नहीं है कि कौन है। बंगाल मे काली की कितनी पूजा करते है मगर शक्ल तो देखो कैसी है। जैसे कि कोई राक्षणी हो। इतनी तो वो भयानक बनाई है। ऐसे तो कोई है नहीं। और फिर दिखाया भी है तो हिंसक। एक हाथ मे तलवार है। कितनी पूजा होती है। बाप समझाते है कि ऐसे काली का स्वरूप कोई होता नहीं है। मनुष्यो के ही चित्र है। अम्बा के पास भी बहुत जाते है। एक मम्मा है फिर साथ-2 मे तुम भी हो। चण्डिका देवी का मेला भी लगता है। यहाँ पर तो देवी कहना भी रांग है। देवी वा श्री अक्षर है ही देवताओं का। श्री लक्ष्मी   ी देवी, श्री नारायण देवता। यह स्वर्गवासियों के अक्षर नर्कवासियों को दे दिये है। यह रांग है। कहते भी हो कि यह पतित दुनिया आसुरी रावण का राज्य है। परन्तु कोई भी समझ नहीं सकते है। आजकल के मनुष्यों की ऐक्टीविटी ही राक्षसों के जैसी है। कैसे-2 खून कर चले जाते है। यह तो राक्षसों का ही काम है ना। एम, पी, आदि भी कहते रहते है कि राक्षस राज्य है। तुम तो अब शिवालय का मालिक बनते हो। शिवालय सतयुग को और वैश्यालय नर्क को कहा जाता है तो तुमको कितना नशा होना चाहिये। हम सारे विश्व को नर्क से स्वर्ग बनाते है। हम ब्र, कु, कु संगम पर है। बाकी तो जो भी शूद्र वर्ण वाले पतित है वो तो कलयुग मे है। वे तो पावन तब बन सके जबकि ब्राह्मण बने। बाप कितनी अच्छी-2 बाते सुनाते है लांग-लांग, बिफोर सतयुग था। उसमे ल-न का राज्य था। उन्होने 84 जन्म कैसे लिये वो हम आपको ल-न की कहानी सुनाते है। यह है रायल कहानी। हम तुमको सत्य नारायण और लक्ष्मी की कथा ऐसी सुनाते है कि जो तुम भी ल-न बन जाओ। यह ~~क~~ संगम युग है इसको पुरुषोत्तम युग भी कहा जाता है। तुम स्वर्ग मे जाते हो तो फर्नीचर भी सारा पर्फेक्ट ही मिलेगा ना। अच्छा बच्चो से रात को नमस्ते ओम